International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 09-09-2022, Accepted: 25-09-2022, Published: 12-10-2022
Volume 8, Issue 5, 2022, Page No. 46-49

निराला साहित्य में स्त्री संचेतना

डॉ0 प्रमिला यादव
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, मोहम्मद हसन पी0 जी0 कॉलेज, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारतं

सारांश
प्राचीन भारत में स्त्री का अत्यधिक महत्व था। वह समाज में आदर तथा सम्मान की पात्र थी। उसे चहुँमुखी विकास करने का अवसर प्राप्त था। विवाह, शिक्षा, सम्पत्ति में वह बराबर का अधिकार रखती थी। पुत्री, पत्नी और माता के रूप में उसको अत्यधिक आदर प्राप्त था। वह पुरुष की अर्द्धांगिनी मानी जाती थी। उसे लक्ष्मी के रूप में सुख प्रदान करने वाली माना जाता था। किन्तु उसकी स्थिति ज्यादा समय तक ऐसी नहीं रही। परवर्ती कालखण्डों में सामाजिक–राजनीतिक परिस्थितियों में होने वाले परिवर्तनों के कारण उसकी स्थिति में युगानुरूप परिवर्तन आते रहे। यह ह्रासिक परिवर्तन वैदिक युग से लेकर स्वतन्त्रता प्राप्ति तक उत्तरोत्तर बढ़ता रहा। 'निराला' युगद्रष्टा कवि थे। वह अपनी प्राचीन संस्कृति से पूर्णतया भिज्ञ होने के साथ ही वर्तमान के क्षरित होते सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों के सचेत चिंतक भी थे। वह देख रहे थे कि लम्बी गुलामी से उपजी शोषण व्यवस्था के कारण देश और समाज दोनों खोखले होते जा रहे हैं। अस्तु उन्होंने देश तथा समाज की विकृत होती व्यवस्था के लिए जिम्मेदारों के खिलाफ अपनी लेखनी का प्रयोग निर्भीकता के साथ किया। नारी शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व करती थी। वस्तुतः निराला के प्रबल समर्थन की पात्र बनी। उनकी दृष्टि में नारी इस सृष्टि में पुरुष की जीवन–प्रेरणा का स्त्रोत है। इसीलिए उनके समस्त साहित्य में नारी के प्रति उनका दृष्टिकोण स्वस्थ और स्नेहपूर्ण रूप में मिलता है।

मूल शब्दः संचेतना, पुंजित, ह्रासोन्मुखी, जीवन मूल्य, युगद्रष्टा, अर्वाचीन, शक्तिरूपा, मातृसुलभ

प्रस्तावना
प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्था में नारी का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। प्राचीन काल से ही वह समाज में मर्यादित एवं आदृत रही है। प्रारम्भिक काल में वह अनेक दृष्टियों से पुरुषों के समकक्ष थी। अपनी क्षमता व इच्छानुसार अपना आत्म–विकास व उत्थान कर सकती थी। विवाह, शिक्षा, सम्पत्ति में वह अधिकार रखती थी। कन्या, पत्नी और माता के रूप में वह समाज में आदर प्राप्त करती थी। शास्त्रकारों द्वारा स्पष्ट किया गया कि पुरुष बिना स्त्री के अपूर्ण है। 'स्त्री' पुरुष की शरीरार्द्ध और अर्द्धांगिनी मानी गयी तथा 'श्री' और 'लक्ष्मी' के रूप में वह मनुष्य को सुख और समृद्धि से दीप्त तथा पुंजित करने वाली कही गयी–

प्रजानार्थ महाभागाः पूजहि गृहदीप्तयः।
स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन।।[1]

किन्तु स्त्रियों की यह स्थिति सदा एक सी नहीं रही। इतिहास के विविध कालखण्डों में सामाजिक–राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार जो भी परिवर्तन हुए उसने स्त्री की स्थिति को भी प्रभावित किया। जिस कारण इसमें युगानुरूप परिवर्तन आते रहे। वैदिक युग से लेकर स्वतन्त्रता प्राप्ति तक वह अनेक उतार–चढ़ाव से गुजरी। वैदिक कालीन हिन्दू जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी प्रतिष्ठित थी तथा उसे आदर प्राप्त था। वह स्वेच्छा से जीवन की दिशा तय कर सकती थी और बिना किसी प्रतिबन्ध के सामाजिक गतिविधियों में सम्मिलित होती थी। सभी दृष्टि से वह पुरुषों के समकक्ष थी। शिक्षा, ज्ञान, यज्ञ आदि विभिन्न क्षेत्रों में वह साधिकार स्वतंत्रतापूर्वक सम्मिलित होती थी तथा सम्मान प्राप्त करती थी। पति के साथ प्रत्येक कार्य में सहयोग प्रदान करती थी तथा पारिवारिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करती थी। बिना पत्नी के गृह की परिकल्पना व्यर्थ मानी गयी।[2] सम्पत्ति में भी उसका अधिकार स्वीकार किया गया–

न हि ग्रभायारणः सुशेयोऽन्यादर्यो मनसा मन्तवाउ।[3]

सूत्रों, स्मृतियों तथा महाकाव्यों के काल में स्त्रियों की स्थिति में क्रमिक ह्रास आया और उसकी स्थिति निम्नतर हुई। धर्मशास्त्रकारों ने उस पर राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और वैयक्तिक– सभी प्रकार के प्रतिबन्ध लगाए। जन्म से मृत्यु तक उसे पुरुष के नियंत्रण में रहने के लिए निर्देशित किया गया। कन्या, पत्नी तथा माता जैसी स्थितियों में वह क्रमशः पिता, पति व पुत्र द्वारा नियंत्रित एवं संरक्षित मानी गयी–

पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।
रक्षन्ति स्थविरेपुत्र न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति।।[4]

उसका मान घटने लगा। उसका स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त कर दिया गया तथा उसपर पति का स्वत्व माना गया।[5] उसकी स्थिति निरन्तर ह्रासोन्मुख होती रही। पूर्वमध्य युग तक आकर वैदिक युग के बहुत सारे अधिकारों से वंचित कर दी गयी। उसका उपनयन संस्कार बन्द कर दिया गया जिससे वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन से वंचित हो गयी। यह कहा गया कि पति ही कन्या का आचार्य, विवाह ही उसका उपनयन संस्कार, पति की सेवा ही उसका आश्रम–निवास और गृहस्थी के कार्य ही उसके दैनिक धार्मिक अनुष्ठान हैं–

वैवाहिकोविधिः स्त्रीणां संस्कारो वैदिको मतः।
पति सेवा गुरौर्वासौ गृहार्थोग्नि परिक्रिया।।[6]

उसका सम्पत्ति विषयक अधिकार भी क्षतिग्रस्त हुआ। पराभव की यह स्थिति हिन्दी के उद्भव से लेकर निराला के जीवन काल तक बनी रही।

विस्तार

महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' युगद्रष्टा कवि थे। उनके ज्ञान की सीमा का विस्तार प्राचीन से लेकर अर्वाचीन काल तक था। वह अपनी प्राचीन संस्कृति से पूर्णतया भिज्ञ होने के साथ ही वर्तमान के क्षरित होते सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों के द्रष्टा भी थे। वह देख रहे थे कि किस प्रकार देश, परिवार तथा समाज से जीवन मूल्य गायब होते जा रहे हैं। वह यह भी देख रहे थे कि गुलामी की लम्बे समय तक की स्थिरता ने देश और समाज को खोखला एवं पंगु बना दिया है। इसी लिए उन्होंने देश तथा समाज की विकृत होती व्यवस्था के लिए जिम्मेदारों के खिलाफ अपनी लेखनी का प्रयोग निर्भीकता के साथ किया। व्यवस्था विरोधी तत्वों को वे शोषकों की श्रेणी में गिनते थे तथा व्यवस्था से पीड़ित वर्ग उनके काव्य का शोषित वर्ग था जिसका प्रतिनिधित्व स्त्री भी करती थी। कदाचित इसीलिए निराला की नारी चेतना अत्यन्त शूक्ष्म, संवेदनायुक्त तथा व्यन्जनाधर्मी बनी। यह वंचनाओं की पीड़ा झेलने वाला वर्ग था। उनकी दृष्टि से स्त्री, इस सृष्टि में पुरुष की जीवन–प्रेरणा का स्त्रोत है। तभी तो उनके समस्त साहित्य में नारी के प्रति उनका दृष्टिकोण स्वस्थ और स्नेहपूर्ण रूप में मिलता है।

महाप्राण निराला स्त्री की गरिमामयी तथा बोधयुक्त दृष्टि को महत्व देते थे। उनकी काव्यधारा पूर्णतः स्त्री के आत्मिक सौन्दर्य की ओर ही उन्मुक्त हुई है। उनका जीवनमार्ग चाहे जितना भी विडम्बनापूर्ण तथा अव्यवस्थति रहा हो, किन्तु उनकी कविता नारी के प्रति उनके मन की श्रेष्ठता को ही अभिव्यक्त करती है। उससे वह वैचारिक ऊष्मा प्राप्त करते हैं। उनकी स्त्री–चेतना की स्वभाविक परिणति उनके आदर्श रूप में ही विकसित हुई है जिसके कारण उनकी स्त्री ओजमयी है, ऊर्जा से परिपूर्ण और कल्याण की धात्री है, संयम की कठोर शिला है, धैर्यशीला और शान्ति स्वरूपा है। इसलिए वह नारी के दैहिक एवं आत्मिक दोनों सुन्दरता को एक साथ प्रस्फुटित करते हैं। परिमल में संग्रहीत 'बहू' कविता उनकी स्त्री चतेना की व्यक्तिकरण को पूर्णतया प्रकट करती है। उनकी स्त्री–चेतना का प्रमाण 'सन्ध्या–सुन्दरी', 'जूही की कली', 'शेफालिका' और 'जागो फिर एक बार' आदि कविताएं हैं। वह मानते हैं कि स्त्री काम–भोग की ही वस्तु नहीं है वरन् वह प्रिय की जीवन डोर थाम कर उसे जीवन के अभीष्ट तक पहुँचाने का कार्य भी करती है। तभी वह अपनी रचनाओं में स्त्री का चित्रण प्रमुखता से करते हैं।

निराला प्राचीन भारतीय संस्कृति से पूर्णरूप से परिचित थे। उनको ज्ञान था कि स्त्री को हटाकर मनुष्य जीवन में सफल नहीं हो सकता है। नारी मूल प्रेरक शक्ति है। वह स्त्री की स्वाधीनता एवं उसके स्वावलम्बन के समर्थक थे। उसकी स्थिति में बदलाव के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने लिखा है– 'अब घर के कोने से समाज एवं धर्म की साधना नहीं हो सकती। ज़माने ने रूख बदल दिया है। हमारे देश की लड़कियों पर बड़े–बड़े उत्तरदायित्व आ पड़े हैं। उन्हें वायु की तरह मुक्त रखने में ही हमारा कल्याण है। तभी वे जाति, धर्म एवं समाज के लिए कुछ कर सकेंगी। उन्हें दबाव में रखकर इस देश के लोग अपने जिस कल्याण की चिन्ता में पड़े हैं, वह कल्याण कदापि नहीं, प्रत्युत् निरी मूर्खता है।'

उनका मानना था कि– 'मुक्ति का यथार्थ सूत्र स्त्रियों के हाँथ में है। स्त्रियों का आदर सम्मान जबतक नहीं होता, तब तक देवता भी सन्तुष्ट नहीं होते।' इसीलिए उनके काव्य एवं कथा दोनों में स्त्री अत्यन्त महत्वपूर्ण वर्ण्य–विषय रही है। अपरा, अनामिका, अलका, अप्सरा, निरुपमा, प्रभावती, पद्मा और लिली, ज्योतिर्मयी, कमला, श्यामा तथा देवी आदि रचनाओं का नाम स्त्री के नाम पर होना उनकी स्त्री–चेतना का प्रदर्शन करती है। उन्होंने स्त्री को माता, पत्नी, बहिन, पुत्री, प्रेयसी आदि सभी रूपों को अपनी रचनाओं में व्याख्यायित किया है।

माता व आदिशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करते हुए उन्होंने ने स्त्री को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया है। विवेकानन्द से प्रभावित होने के करण निराला की भक्ति का प्रमुख आधार स्त्री का मातृ रूप बना–

जीवन का एक ही अवलम्ब है सेवा;
है माता का आदेश यही,
माँ की प्रीति के लिए ही चुनता हूँ सुमन–दल,
इसके शिवा कुछ भी नहीं जानता–
जानने की इच्छा भी नहीं है कुछ।
माता की चरण–रेणु मेरी परम शक्ति है–
माता की तृप्ति मेरे लिए अष्टसिद्धियाँ–
माता के स्नेह–शब्द मेरे सुख साधन हैं धन्य हूँ मैं......।
——————————————

जड़–चेतन मिले हुए जी–जग
बनते–पलते हैं, – नष्ट होते हैं अन्त में –
सारे ब्रह्माण्ड के जो मूल में विराजती हैं आदि शक्ति–ज्ञापिणी,
दाकित से, जिनका शक्तिशालियों में सत्ता है–
माता है मेरी वे।
जिनके अस्तित्व की ही
दीखती है दृढ़ छाप
माता हैं मेरी वे।[7]

निराला ने शक्तिस्वरूपा स्त्री का दुर्गा, काली, चण्डी, पार्वती, श्यामा आदि रूपों में चित्रण किया है। इसीलिए राम की शक्तिपूजा में विजय प्राप्त करने के लिए राम अन्य सहयोद्धाओं की सलाह मानते हुए माता शक्ति की पूजा–आराधना करने का निर्णय लेते हैं–

बोले आवेग–रहित में विश्वास–स्थित–
''मातः, दशभुजा, विश्व–ज्योतिः, मैं हूँ आश्रित;
हो विद्ध शक्ति से है महिषासुर खल मर्दित;
जनरंजन–चरण–कमल–तल धन्य सिंह गर्जित!
यह, मेरा प्रतीक मातः समझा इंगित;
मैं सिंह, इसी भाव से करूंगा अभिनन्दित।''[8]

किन्तु वहीं निराला माता की दयालुता को भी स्थपित करते हैं। वह पुत्र का अनिष्ट नहीं देख सकतीं। इसीलिए वह कहती है–

''होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन।''
कह महाशक्ति राम के बदन में हुई लीन।[9]

माता के प्रेम की अभिव्यक्ति 'पद्मा' तथा 'लिली' कहानी में वह इस प्रकार करते हैं– 'माता की वात्सल्य–सरिता में कुछ देर के लिए बाढ़ सी आ गई।' वास्तव में नारी का यही मातृत्व निराला की भक्ति एवं शक्ति दोनों है।

पत्नी के रूप में स्त्री का चित्रण निराला ने आदर्श रूप में प्रस्तुत किया है। वह एक आदर्श पत्नी तथा गृहणी है। सदैव सुख–दुख में पुरुष का सम्बल बनती है–

कितनी ही बार पी मूर्छित हुए हो प्रिय,
जागती मैं रही,
गह–बाँह, बाँह में भरकर सँभाला तुम्हें।[10]

पति भी पत्नी के प्रति उतना ही संवेदन शील रहता है। पत्नी के प्रति प्यार और संवेदना को 'राम की शक्तिपूजा' में निराला के राम इस प्रकार व्यक्त करते हैं–

ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी तनय–कुमारिका–छवि अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का,– प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का–नयनों से गोपन–प्रिय सम्भाषण
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान–पतन,
काँपते हुए किसलय,– झरते पराग–समुदय, –
गाते–खग नव–जीवन–परिचय,–तरु मलय–वलय,
ज्योतिः–प्रपात स्वर्गीय,–ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,–
जानकी–नयन–कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।[11]

'सरोज स्मृति' में निराला ने पुत्री के रूप में स्त्री का भावपूर्ण तथा उत्कृष्ट स्वरूप में चित्रित किया है। वास्तव में यह निराला के करुण हृदय का अपनी बेटी के निधन पर पढ़ा जाने वाला शोकगीत है। आर्थिक विपन्नता के कारण पुत्री का सही ढंग से पालन–पोषण न कर पाने का दुःख निराला को तड़पाता रहा। वह लिखते हैं–

अस्तु, मैं उपार्जन को अक्षम
कर नहीं सका पोषण उत्तम
कुछ दिन को, जब तुम रही साथ,
अपने गौरव से झुका माथ,
———————————
समझाता हुआ रहा देख
हटती भी पथपर दृष्टि टेक।[12]

निराला दहेज एवं कुल–खानदान के प्रदर्शन के प्रबल विरोधी थे। उसे वह समाज का कोढ़ मानते थे। उनके अनुसार इसी से पुत्री का जन्म दुःख कारण बना हुआ है। निराला इसके दृढ़ विरोधी थे तथा उन्होंने अपनी पुत्री के विवाह में इसके विरूद्ध कार्य किया। वह कन्या की योग्यता के अनुसार वर की तलाश के पक्षधर थे। इसीलिए वह योग्य वर को बुलाकर उससे अपनी कन्या सरोज का विवाह नाते–रिश्तेदारों की अनुपस्थिति तथा विद्वत्जनों की उपस्थिति में करते हैं। वह कहते हैं–

सोचा मन में हत बार–बार – / ''ये कान्यकुब्ज – कुल कुलांगार,
खाकर पत्तल में करें छेद, / इनके कर कन्या, अर्थ खेद,
इस विषम बेलि में विष ही फल, / यह दग्ध मरुस्थल–नहीं सुजल।''
————————————————————————————
ढोते मैं हूँ अक्षम; निश्चय / आयेगी मुझमें नहीं विनय
उतनी जो रेखा करे पार / सौहार्द्र – बन्ध की निराधार।

वह आगे कहते हैं–

वे जो यमुना के से कछार / पद फटे बिवाई के उधार
खाये के मुख ज्यों, पिये तेल / चमरौधे जूते से सकेल
———————————————————————————
तुम करो व्याह, तोड़ता नियम / मैं सामाजिक योग के प्रथम
लग्न के; पढ़ूंगा स्वयं मन्त्र / यदि पण्डित जी होंगे स्वतन्त्र।
जो कुछ मेरे, वह कन्या का / निश्चय समझो, कुल धन्या का।[13]

बहन के रूप को उन्होंने अत्यन्त भावपूर्ण ढंग से चित्रित किया है। 'तुलसीदास' कविता में भाई–बहन सम्बन्ध के अनेक चित्र निराला ने प्रस्तुत किया है। विदा हेतु आए भाई को देख रत्ना की आतुरता दृष्टव्य है–

लख रत्नावली खुली सहास, अवरोध रहित बढ़ गयी पास।[14]

'परिमल' में निराला ने प्रेमी और प्रेमिका से सम्बन्धित गीत लिखा है। बसन्त यौवन और मादकता का उल्लास है। उसके आगमन पर पुष्प सुरभित हो जाते हैं तथा मन उल्लास से भर उठता है। इस स्थिति में प्रेमिका का चित्रण निराला ने किया है–

वही हृदय–हर प्रणय–समीरण, छोड़ छोर नभ ओर उड़ा मन,
रूप–राशि जागी–जगती–तन, खुले नयन भाए।[15]

किन्तु यहाँ वह परम्परागत मूल्यों को नहीं भूलते। राम की शक्तिपूजा में राम और सीता के प्रथम मिलन का एक दृश्य दृष्टव्य है–

नयनों से नयनों का गोपन–प्रिय सम्भाषण,–
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान–पतन–
कॉपते हुए किसलय,– झरते पराग–समुदय,– ....।[16]

अन्य रूपों में भी निराला ने स्त्री का चित्रण किया है। बहू के रूप का एक चित्रण दृष्टव्य है–

पुष्प है उसका अनुपम रूप,
कान्ति सुषमा है,
मनोमोहिनी है वह मनोरमा है,
जलती अन्धकारमय जीवन की वह एक शमा है।
वह सुहाग की रानी,
भावमग्न कवि की वह एक मुखरता–वर्जित वाणी।
सरलता ही से उसकी होती मनोरंजना,
नीरवता ही करती उसकी भाव व्यंजना।[17]

भाभी के रूप में मातृसुलभ तथा विनोदिनी दोनों रूपों में नारी का चित्रण निराला ने किया है। सीता लक्ष्मण की मातृस्वरूपा भाभी हैं तथा 'तुलसीदास' में विनोदिनी भाभी ने तुलसीदास के रत्ना के पीछे–पीछे ससुराल पहुँचने पर विनोद करते हुए कहा–

पहुँचे रत्नाघर रमा के पुर.................
सुन बोली भाभी, यह पहचान रतन की।[18]

विधवा के रूप में वह नारी की द्रवित स्थिति का चित्रण करते हैं–

वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा–सी
वह दीप–शिखा–सी श्रान्त, भाव में लीन,
वह क्रूर काल–ताण्डव की स्मृति–रेखा–सी
वह ठूठे तरु की छुटी लता–सी दीन–
दलित भारत की ही विधवा है।[19]

विधवा पुनर्विवाह की वह जोरदार वकालत करते हैं। उनका कहना था कि एक तरफ तो विधवा एक विवाह भी नहीं कर सकती चाहे जितनी कम उम्र की हो। दूसरी तरफ पुरुष कई विवाह कर सकता है, पत्नी के जीवित रहते भी। यह दोहरी व्यवस्था निन्दनीय है। इसीलिए वह इसके घोर विरोधी थे। अलका नामक उपन्यास में अजित से विधवा वीणा का विवाह कराकर वह इसका विरोध करते हैं।

श्रमशीला के रूप में वह स्त्री को अत्यन्त धौर्यवान, दृढ़, कठोर तथा स्वावलम्बी स्वरूप में अपनी रचना में प्रस्तुत करते हैं–

वह तोड़ती पत्थर, / देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर /वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार /पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन, / नत नयन प्रिय कर्मरत मन,
———————————————————————
दिवा का तमतमाता रूप / उठी झुलसाती हुई लू
रुई ज्यों जलती हुई भू, / गर्द चिनगी छा गई,
प्रायः हुई दुपहर, / वह तोड़ती पत्थर।[20]

वेश्या को भी वह हेय और त्याज्य दृष्टि से नहीं देखते। पतित समझी जाने वाली वेश्या में वह स्त्री गरिमा के दर्शन करते हैं। 'क्या देखा' कहानी में हीरा नामक वेश्या के त्यागपूर्ण जीवन का वर्णन इसका प्रमाण है। भ्रूण हत्या की समस्या आज भी विद्यमान है। निराला के समय में इसका रूप विकराल था। इसके मूल में दहेज प्रमुख था। ऐसे समय में निराला का पिता के रूप में पुत्री की मृत्यु पर विलाप तथा स्वयं अपने पितृत्व की निरर्थकता अनुभव कर एक शोक ग्रन्थ की रचना कर देना स्त्री के प्रति उनकी भावुकता का अप्रतिम प्रमाण है।
उपन्यासों में उन्होंने स्त्रियों को प्रगतिशील, प्रबुद्ध एवं उन्मुक्त प्रेम के पोषक के रूप में चित्रित किया है। कनक, अलका, प्रभावती, पद्मा, ज्योतिर्मयी, श्यामा आदि स्वच्छन्द प्रेम की व्याख्या करती हैं। निराला ने स्त्रियों को अन्य सामाजिक समानाधिकार देने के साथ रोमांस की भी पूरी छूट दी है।

निष्कर्ष
कुल मिलाकर हम देखते हैं कि निराला मानवतावादी रचनाकार थे। प्रत्येक मानवतावादी व्यक्ति सकारात्मक विचारों से ओत–प्रोत होता है। उसके यही विचार उसकी रचनाओं में स्थान पाता है। इसीलिए निराला हिन्दी साहित्य में आज भी दैदीप्यमान हैं। नारी के प्रति उनकी मानवतावादी दृष्टि ही उनके सम्पूर्ण साहित्य में प्राप्त होती है। वह नारी के हर रूप को अपनी रचना का भाग बनाते हैं। कहीं उसका दैन्यभाव, कहीं उसकी श्रमशीलता, कहीं हास–विलास, कहीं नयनों का संगोपन, कहीं सामाजिक बुराइयों के खिलाफ उसकी ललकार, कहीं उसकी मातृ रूपी वत्सलता– सब कुछ वह अपनी लेखनी में समेटते हैं। वह उसकी शिक्षा का समर्थन करते हैं तो उसकी स्वतन्त्रता को आवश्यक बताते हैं, कहीं उसके आर्थिक स्वावलम्बन की वकालत करते हैं तो कहीं कुण्ठित बन्धनों से उसकी मुक्ति का आह्वान करते हैं, बाल्य विवाह का विरोध तथा विधवा पुनर्विवाह का समर्थन करते हैं। समष्टि में उनकी स्त्री–संचेतना सात्विक, उत्कृष्ट एवं आदर्शमयी है। सम्पूर्ण काव्य में वह स्त्री के सत्‌भाव का दर्शन करते हैं। इसीलिए उनकी स्त्री–चेतना स्वस्थ, नारी चित्रण शूक्ष्म, तटस्थ एवं संयमित है। स्थूल नहीं है। यहाँ तक कि श्रृंगार वर्णन में भी वह श्लीलता का ध्यान रखते हैं। उनका स्त्री–चि़त्रण हृदय में सात्विक भाव जगाता है। स्त्री को वह शक्ति का प्रतिरूप मानते हैं। उनकी रचनाओं की स्त्री दुर्बल व क्षीण मनोवृत्ति वाली नहीं होती। वह क्षमा एवं सहनशीलता की प्रतिमूर्ति है। इसी लिए वह पुरुष से बड़ी है। यही निराला की वास्तविक स्त्री–संचेतना है।

सन्दर्भ

1. बृहत्संहिता, 74.5.5, 11, 15–16;मनु0, 9.26
2. शत0 ब्रा0, 1.19, 2.14
3. ऋग्वेद, 74.8,
4. मनु0, 9.3,
5. श0 ब्रा0, 4.4.2.13
6. मनु0, 2.67,
7. निराला रचनावली भाग 1
8. अनामिका (राम की शक्तिपूजा)
9. अनामिका (राम की शक्तिपूजा)
10. निराला : अनामिका
11. निराला : परिमल
12. निराला : अनामिका (सरोज स्मृति)
13. सरोज स्मृति से
14. निराला : तुलसीदास
15. निराला : परिमल
16. अनामिका (राम की शक्तिपूजा)
17. निराला रचनावली भाग 1
18. निराला : अणिमा
19. निराला रचनावली भाग 1
20. निराला रचनावली भाग 1